रुचिरा

प्रथमो भागः

षष्ठवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

0649

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT
not to be republished

0649 – रुचिरा प्रथमो भाग
कक्षा 6 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-468-0

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2006 पौष 1928
संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण
अगस्त 2010 भाद्रपद 1932
पुनर्मुद्रण
फ़रवरी 2012 फाल्गुन 1933
दिसंबर 2012 अग्रहायण 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
फ़रवरी 2015 फाल्गुन 1936
दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937
जनवरी 2017 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941
नवंबर 2021 अग्रहायण 1943

PD 100T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2010

₹ **55.00**

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा संजीव ऑफ़सेट प्रिंटर्स, एल-39, सेक्टर-5, बवाना इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली – 110 039 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*विपिन दिवान*
सहायक संपादक	:	*एम. लाल*
उत्पादन सहायक	:	*सुनील कुमार*

आवरण
कलोल मजूमदार

चित्रांकन
कलोल मजूमदार एवं अरूप गुप्ता

© NCERT not to be republished

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वतते, न तु नीरसतायाः साधनम्। अस्मिन् संस्करणे पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां

© NCERT not to be republished

प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटिताया: राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नवदेहली
20 नवम्बर 2006

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अर्कनाथ चौधरी, *प्रोफ़ेसर*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर कैंपस, जयपुर।

राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रवाचक* (संस्कृत), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।

वासुदेव शास्त्री, *संस्कृत प्रभारी* (सेवानिवृत्त), एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर।

रामास्वामी आयंगर, *निदेशक* (अवकाश प्राप्त), चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन, बेंगलूरु।

दु:शासन ओझा, *प्राचार्य*, केंद्रीय विद्यालय, पुरी, ओड़ीशा।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड।

पुरुषोत्तम मिश्र, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), रा.बा.मा.वि., कादीपुर, दिल्ली।

संजू मिश्र, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), ए.पी.जे. स्कूल, सैक्टर 16-ए, नोएडा।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक पुनरीक्षण समिति

राधावल्लभ त्रिपाठी, *कुलपति,* राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जनकपुरी, नयी दिल्ली।
रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली।
उमाशंकर शर्मा ऋषि, *पूर्व विभागाध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।
सुरेश चन्द्र शर्मा, *निदेशक,* दिल्ली संस्कृत अकादमी, झंडेवालान, नयी दिल्ली।
पंकज कुमार मिश्र, *वरिष्ठ प्रवक्ता* (संस्कृत), सेंट स्टीफ़ेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता,* एम.वी. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, गीता कालोनी, दिल्ली।
पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।
सुगन्ध पाण्डेय, टी.जी.टी. (संस्कृत), केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।
रणजित बेहेरा *(समन्वयक)*, *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों विशेषत: प्रोफ़ेसर राजेन्द्र मिश्र, *पूर्व कुलपति,* सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी; इच्छाराम द्विवेदी, *प्रवाचक,* श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली एवं नारायण दाश, *शिक्षक* (संस्कृत), सर्वकारीय उच्च विद्यालय, गुम्मा, गजपति, ओड़ीशा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है। प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, *कुलपति,* श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली; प्रो. रमेश भारद्वाज, *संस्कृत विभाग,* दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रो. रंजना अरोड़ा, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; प्रो. जतीन्द्र मोहन मिश्र, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; प्रो. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., डॉ. आभा झा, *पी.जी.टी.*, (संस्कृत), गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली तथा श्रीमती लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, *टी.जी.टी.,* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय संगठन, नयी दिल्ली ने पुस्तक पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है। परिषद् सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

परिषद् डॉ. हर्षदेव माधव तथा डॉ. विश्वास के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य-सामग्री ली गई है।

पुस्तक की निर्माण-योजना से लेकर प्रकाशन पर्यन्त विविध कार्यों में यथासमय सक्रिय भूमिका निभाने के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के समन्वयक व उनके विभागीय सहयोगी कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर* एवं कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), तथा जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर, (संस्कृत)* साधुवाद के पात्र हैं। पुस्तक निर्माण में विविध सहयोग के लिए परसराम कौशिक, *प्रभारी,* कंप्यूटर स्टेशन, भाषा शिक्षा विभाग तथा *डी.टी.पी. ऑपरेटर* नरेन्द्र कुमार वर्मा, राजीव, कमलेश आर्या तथा कु. अनीता धन्यवाद के पात्र हैं।

© NCERT not to be republished

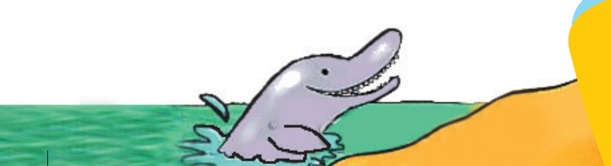

भूमिका

भारत एक बहुरंगी राष्ट्र है। ऐसे में कोई भी पाठ्यपुस्तक एकरंगी और सपाट नहीं हो सकती। शिक्षाशास्त्र का विमर्श भी यह मानता है कि अध्ययन-अध्यापन के क्रम में विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि एवं परिवेश को अगर ठीक तरीके से शामिल नहीं किया जाता तो वह ज्ञानात्मक स्तर पर बोझिल हो जाता है। 1993 में यशपाल समिति ने अपनी रिपोर्ट (*शिक्षा बिना बोझ के*) में इसकी ओर ध्यान दिलाया है। इसके अनुसार सीखने-सिखाने के क्रम में विद्यार्थियों के सन्दर्भ को शामिल किया जाना विशेष महत्त्व रखता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) भी सुझाती है कि बच्चे-बच्चियों के स्कूली जीवन को बाहर की दुनिया से जीवंत रूप से जोड़ा जाना चाहिए।

संस्कृत की **रुचिरा** शृंखला की तीनों पुस्तकें उपरोक्त वैचारिक आधार पर विकसित की गई हैं। इस शृंखला की पहली पुस्तक **रुचिरा प्रथमो भागः** (पुनरीक्षित संस्करण 2018) आपके सामने प्रस्तुत है। अपने नाम के अनुरूप इसे रुचिकर बनाने का यथासंभव प्रयास किया गया है। पुस्तक-निर्माण का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की विद्यार्थियों की क्षमता के विकास में यह सहायक हो। यहाँ संस्कृत भाषा-शिक्षण पर बल है।

संस्कृत भाषा जितनी ही पुरातन है, उतनी ही वह अपने को चिर नवीन भी बनाती आई है। बहुत से अज्ञात कवि हुए हैं जिन्होंने सामान्य जन की छोटी-छोटी इच्छाओं, सपनों एवं कठिनाइयों को भी स्वर दिया है। संस्कृत के आधुनिक लेखन में यह लोकधारा और मुखर हुई है। यही नहीं संस्कृत वर्तमान जीवन और हमारे संसार को समझने पहचानने के लिये भी एक अच्छा माध्यम बनने की क्षमता रखती है। इसलिए '**रुचिरा**' शृंखला की तीनों पुस्तकों में आप क्रमशः साहित्य में चली आ रही विविध धाराओं की छवियाँ पाएँगे। इसमें दूसरी भाषाओं से अनूदित अंश भी लिए गए हैं।

रुचिरा प्रथमो भागः में कुल 15 पाठ हैं। इनमें पाँच पद्यपाठ हैं और शेष गद्यपाठ। *कृषिकाः कर्मवीराः* शीर्षक गीत में भारत के स्त्री एवं पुरुष किसान दोनों की बात की गई है। सामान्य तौर पर स्त्री को किसान के रूप में नहीं देखा जाता, जबकि वास्तविकता यह है कि खेती के अधिकांश कामों में स्त्रियों का श्रम लगता है। *विमानयानं रचयाम* ऐसा पद्य है जिससे बालक रचयाम द्वारा अपनी कल्पनाओं में रंग भरते हैं। *सूक्तिस्तबकः* पाठ में परम्परा से चली

© NCERT not to be republished

आ रही सूक्तियों का संकलन इस प्रकार किया गया है कि वे विद्यार्थियों में, जीवन की बँधी-बँधाई दृष्टि देने का माध्यम न बनें। उदाहरण के तौर पर पहली ही सूक्ति यह बताती है कि कोई भी कार्य करने से सिद्ध होता है केवल कामना करने से नहीं। जिस प्रकार सोते हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं प्रवेश नहीं करता। भाव यह कि वयस्क केन्द्रित ज्ञान मात्र की प्रतिष्ठा पाठ्यपुस्तक द्वारा न हो, इसका ध्यान रखा गया है।

गद्यात्मक पाठों में तीन कथाएँ हैं, दो निबन्ध पाठ हैं और दो संवादात्मक पाठ। *बकस्य प्रतीकारः*, *दशमः त्वम्ऽसि* और *अहह आः च* शीर्षक तीन कथाएँ हैं। *बकस्य प्रतीकारः* कथा लोक प्रचलित है। सम्भव है कि विद्यार्थियों ने अपनी घर-बाहर की भाषाओं में इस कथा के विविध संस्करण सुने-पढ़े होंगे। *दशमः त्वम्ऽसि* कथा में एक पथिक बच्चों को गिनती गिनने में सहयोग करता है। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से लेकर व्यवहार तक में बच्चे-बच्चियों तथा वयस्कों की भूमिका सहयोगी की होती है। *अहह आः च* एक कश्मीरी लोककथा है। लोकबुद्धि सत्ता और उसके शोषणतन्त्र को चुनौती देती है, यह इस पाठ से उभरकर साफ आता है।

निबंधात्मक दो पाठ हैं *समुद्रतटः* और *पुष्पोत्सवः*। समुद्रतट केवल पर्यटन स्थल नहीं है। यह आजीविका से भी जुड़ा है, इसका संकेत इस पाठ में मिलता है। *पुष्पोत्सवः* (फूल वालों की सैर) एक ऐसा उत्सव है जो भारत की मिली-जुली संस्कृति का प्रतीक है। हालाँकि यह मेला बड़े पैमाने पर नहीं मनाया जाता, परन्तु यह महत्त्वपूर्ण है। यह पाठ संस्कृत का समकालीन जीवन से जुड़ाव भी प्रदर्शित करता है। संवादात्मक पाठों में *क्रीडास्पर्धा* नामक पाठ का संग्रह है। इसमें बच्चे स्कूल में होनेवाले खेल की प्रतियोगिताओं की चर्चा करते हैं। ये जो बच्चे हैं वे समाज के विभिन्न समुदायों के हैं। उनमें पूरन नाम के एक बच्चे की विशेष आवश्यकताएँ हैं। अभी तक संस्कृत में विशेष आवश्यकताओं के लिए विकलांग शब्द का प्रयोग किया जा रहा है। परन्तु इस शब्द से हीनता का बोध होता है। इसकी जगह संस्कृत में *अन्यथासमर्थः* पद का प्रयोग यहाँ किया गया है। कारण, यह पुस्तक भाषा-शिक्षण का प्रथम सोपान ही है। उत्तरोत्तर कक्षाओं में भाषा कौशल सीखते हुए विद्यार्थी अपेक्षाकृत जटिल अभिव्यक्तियों को सहज रूप से ग्रहण कर पाएँगे।

इस पुस्तक के प्रारंभिक तीन पाठों में ऐसे शब्दों को समेटने का प्रयास किया गया है जो विद्यार्थियों के दैनंदिन जीवन से जुड़े हैं। कुछ रूढ़िबद्ध धारणाओं से अलग हटकर नयी

© NCERT not to be republished

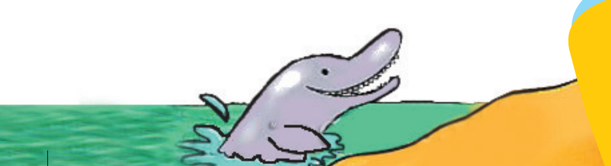

भूमिकाओं में लोगों को दिखाया गया है। यथा *चालिका* शब्द। इसके साथ दिया गया चित्र अर्थ का विस्तार करते हुए टैक्सी चलाती स्त्रियों को दर्शाता है। यद्यपि सामाजिक रूढ़ियों के कारण उनकी संख्या कम है।

कठिन शब्दों का अर्थ-बोध कराने हेतु छात्रों की सुविधा के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में दिया गया शब्दार्थ (संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी) इस पुस्तक की विशेषता है। पुस्तक के अन्त में *परिशिष्ट* रूप में कारक और विभक्तियों का सामान्य परिचय दिया गया है जिससे छात्र इनके अन्तर को समझ सकें। विद्यार्थी पाठों में उठाए गए विचारों पर ध्यान दें और अपने अनुसार उसे समझने का प्रयास करें, यही अपेक्षा है। इसमें शिक्षक-शिक्षिकाओं की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है।

शिक्षक की भूमिका

कोई भी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक कितनी ही वैज्ञानिक और रुचिपूर्ण क्यों न हो, अध्यापन-कार्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। जहाँ अध्यापन की सफलता के लिए तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है, वहीं दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम बनाने के लिए यथावसर दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं उनका विद्यार्थियों से अभिनय भी कराया जा सकता है।

यद्यपि इस संकलन को विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, तथापि इसको और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सतत स्वागत करेंगे।

© NCERT not to be republished

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

MKGandhi

© NCERT not to be republished

पाठानुक्रमणिका

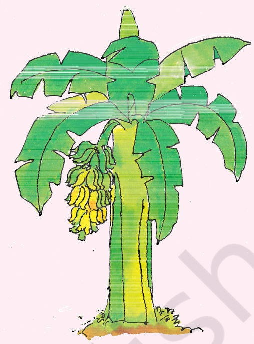

	पुरोवाक्	*iii*
	भूमिका	*vii*
	मङ्गलम्	*xii*
प्रथमः पाठः	शब्दपरिचयः–I	1
द्वितीयः पाठः	शब्दपरिचयः–II	9
तृतीयः पाठः	शब्दपरिचयः–III	16
चतुर्थः पाठः	विद्यालयः	23
पञ्चमः पाठः	वृक्षाः	30
षष्ठः पाठः	समुद्रतटः	35
सप्तमः पाठः	बकस्य प्रतीकारः	41
अष्टमः पाठः	सूक्तिस्तबकः	46
नवमः पाठः	क्रीडास्पर्धा	51
दशमः पाठः	कृषिकाः कर्मवीराः	58
एकादशः पाठः	पुष्पोत्सवः	63
द्वादशः पाठः	दशमः त्वम् असि	68
त्रयोदशः पाठः	विमानयानं रचयाम	74
चतुर्दशः पाठः	अहह आः च	78
पञ्चदशः पाठः	मातुलचन्द्र! (*बालगीतम्*)	83
परिशिष्टम्	कारक-विभक्ति-परिचयः, शब्दरूपाणि धातुरूपाणि च	88

© NCERT not to be republished

मङ्गलम्

अहं नमामि मातरम्
गुरुं नमामि सादरम् ।।1।।
स्वयं पठामि सर्वदा
प्रियं वदामि सर्वदा ।।2।।
हितं करोमि सर्वदा
शुभं करोमि सर्वदा ।।3।।
विभुं नमामि सादरम्
गुरुं नमामि सादरम् ।।4।।
चलामि नीति-सत्पथे
हरामि मातृभू-व्यथाम् ।।5।।
दधामि साधुताव्रतम्
सृजामि कीर्तिसत्कथाम् ।।6।।
प्रभुं नमामि सादरम्
अहं नमामि मातरम् ।।7।।

इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव:'

© NCERT not to be republished